लघु व कुटीर उद्योगों का महत्व
कृषि कुंभ (मई 2023),
खण्ड 02 भाग 12, पृष्ठ संख्या 80–82

लघु व कुटीर उद्योगों का महत्व

डॉ0 पूनम सिंह,
प्रभारी प्रबन्ध एवं उपभोक्ता विज्ञान,
सामूदायिंक विज्ञान महाविद्यालय,
आचार्य नरेन्द्र देव एवं कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, भारत।
Email Id: poonamsingh4673@gmail.com

प्रस्तावना

लघु या कुटीर उद्योग से आशय ऐसे छोटे–छोटे परम्परागत एवं नये उद्योग धन्धे स्थापित करने से है जो कर्मकारों के अपने परिवेश, गांव या कस्बें आदि के आसपास के लोगों को अधिक से अधिक काम देकर उनकी रोजी रोटी की समस्या का समाधान कर समाधान कर सके, ताकि उन्हे दूर जाकर अपनी मूल भूमि से दूर न जाना पड़े। लघु उद्योग व उद्योग है जो विनिर्माण, उत्पादन और सेवाओं के प्रतिपादन में छोटे पैमाने पर किए जाते है। कुटीर उद्योगों में पारिवारिक श्रम का उपयोग किया जाता है। लघु उद्योग भारत जैसे अविकसित देशों के के आर्थिक विकास के लिए अनुकूल हैं। ऐसे उद्योग अपेक्षाकृत श्रम प्रधान होते हैं। इसलिए वे दुर्लभ पूंजी का किफायती उपयोग करते हैं।

लघु व कुटीर उद्योग की समस्याएं

लघु व कुटीर उद्योगो के सामने आने वाली प्रमुख समस्याएं निम्नवत् हैं–

1. समय पर और पर्याप्त ऋण की अनुपलब्धता होती है।
2. तकनीकी ज्ञान की कमी।
3. कच्चे माल की कमी।
4. बाजार विपरण की समस्या
5. अक्षम प्रबंधन
6. बिजली की आपूर्ति
7. वित्त की समस्या

लघु व कुटीर उद्योग का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्व–

कुटीर उद्योगों में इस्तेमाल होने वाला अधिकतर कच्चा माल कृषि क्षेत्र में आता है। अतः किसानों के लिए अतिरिक्त आय की व्यवसाि कर भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को और अधिक बल प्रदान करता है। इनमें कम पूंजी लगाकर अधिक उत्पादन किया जा सकता है। और बड़ी मात्रा में व्यक्ति को रोजगार भी प्रदान किया जा सकता है। भारत जैसी विकासशील अर्थव्यवस्था में जहाँ पूंजी का अभाव, गरीबी और बेराजगारी का बढावा है। वहाँ कुटीर एवं लघु उद्योग आर्थिक, सामाजिक, एवं राजनैतिक सभी पहलुओं से औद्योगिक विकास की आधारशिला है।

लघु व कुटीर उद्योग खोलने के फायदे–

1. लघु व कुटीर उद्योग खोलने के लिए कम पूंजी की आवश्यकता होती है। अर्थात कम पूंजी निवेश करके भी उद्योग खोला जा सकता है।
2. लघु व कुटीर उद्योग खोलने के लिए सरकार भी प्रेरित करती है, तथा समय–समय पर लघु व कुटीर उद्योग के लिए प्रतिक्षण कार्यक्रम भी चलाया जाता है।
3. लघु व कुटीर उद्योग के लिए किसी विशेष खरीद पर सरकार द्वारा आरक्षण भी दिया जाता है।
4. लघु उद्योग स्थापित करने के लिए मशीने, कच्चा माल, मजदूर, सस्ते दरों पर उपलब्ध हो जाते हैं, क्योकि अधिकतर लघु उद्योग स्थानीय लोगों के लक्ष्य को रखते हुए ही स्थापित किये जाते हैं, जिससे उन्हें घर के नजदीक काम करने को मिल जाता है।

लघु व कुटीर उद्योग लगाने के लिए निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए जैस–

- लघु व कुटीर उद्योग जिस भी प्रकार का खोलना हो वह आपकी रुचि से मेल करता हो।
- उद्योग शुरु करने से पहले उस क्षेत्र के विशेषज्ञ से पूर्ण जानकारी प्राप्त कर लेना चाहिए।
- उद्योग शुरु करने से पहले इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जिस भी क्षेत्र में उद्योग स्थापित करना है वह क्षेत्र बाजार विपरण के लिए सुचारु रुप से कार्यरत है या नहीं।
- उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद या सेवा आपके ग्राहकों को संतुष्ट कर पायेगी।
- उद्योग को स्थापित करने के लिए तकनीकी ज्ञान की जानकारी होना भी अति आवश्यक है।
- लघु व कुटीर उद्योग स्थापित करते समय बाजार का ज्ञान होना भी जरुरी है।

लघु व कुटीर उद्योगो में अन्तर–

लघु उद्योग		कुटीर उद्योग	
1.	लघु उद्योग में थोड़ी सी पूंजी द्वारा छोटी–छोटी मशीनों की सहायता से वस्तुओं का निर्माण किया जाता है।	1.	कुटीर उद्योग में वस्तुओं का निमार्ण स्थानीय कच्चे माल का प्रयोग करकें घरों में किया जाता है। कुटीर उद्योग में कम पूंमजी की आवश्यकता होती है।

2.	लघु उद्योग में खिलौने बनाना, जूते बनाना, रिडियों, टी0वी0, घड़ी के पूर्जे इत्यादि चीजे बनाई जाती है।	2.	कुटीर उद्योग में गांव में विकसित विविध शिल्प रेगाई, छपाई, चटाइयां, मिट्टी के बर्तन, सोने–चांदी के आभूषण इत्यादि बनाए जाते हैं।
3.	लघु उद्योग में उत्पाद व्यापारी के माध्यम से बाजारों में बेचा जाता है।	3.	कुटीर उद्योग में उत्पाद स्थानीय बाजार में परिवार के सदस्यों द्वारा बेचा जाता है।

लघु उद्योग की लिस्ट

एक लघु उद्योग व है जहां सेवाओं का प्रावधान, संरचना, और उत्पादन छोटे पैमाने पर किया जाता है। लाखो लोग भारत में छोटे व्यवसायों और उन व्यवसायों का हिस्सा है जो देश में आपने उत्पादों का आयात करते हैं। लघु उद्योग की सूची निम्न है–

- अगरबत्तियाँ
- मसाले
- चिप्स और स्नैक्स
- हैडलुम उद्योग
- पापड़, सैनिटरी नैपकिन आदि।

कुटीर उद्योग की लिस्ट

भारत में कुटीर उद्योग का अत्याधिक महत्वपर्ण योगदान है भरत कृषि प्रधान देश है। आज भी यहा की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है। समय–समय पर भारत सरकार द्वारा कुटीर उद्योगों को बढावा दिया जाता है। कुटीर उद्योग की सूची निम्न है–

- दूध उत्पादन
- ऊन का उत्पादन
- मूर्गीपालन
- मधुमक्खी पालन
- बकरी पालन

कृषि सहायक कुटीर उद्योग

प्राचीन समय में भारत में कृषि सम्बन्धी उत्पादन ही कृषि सहायक उद्योगों में कच्चे माल की भूमिका निभाते हैं। इनमें सूत कातना, बीड़ी बनाना, टोकरी बनाना, चावल व दालें तैयार करना, आदि उद्योग शामिल हैं। कृषि सहायक कुटीर उद्योग को शुरु करने के लिए कच्चा माल खेत में ही उपलब्ध हो जाता है। कृषि सहायक कुटीर उद्योग ऐसे होते है जिन पर ग्रामीण व्यक्तियों का जीवन निर्भर करता है। जैसे– चटाई निर्माण, मिट्टी के बर्तन बनाना, लुहारो का काम का व्यवसाय आदि।

निष्कर्ष

इस प्रकार कहा जा सकता है कि लघु व कुटीर उद्योग को अपनाने से रोजगार के अवसर अधिक है।